Lecture No – ①

Name of the college – APSM College, Barauni, Begusarai
Name – Dr. Bharti Kumari (G.T)
Deptt – A.I.H&C
Lesson plan – BA (H), AIH&C, part – I, paper 1
Name of the topic – Chol Kalin Art.
Date – 27-04-2021

चोल कालीन कला

चोलों ने पल्लवों की स्थापत्य परम्परा को आगे बढ़ाया। दक्षिण में अनेक प्रकार प्रकार के मंदिरों का निर्माण हुआ। इनकी द्रविड़ शैली की कुछ विशेषताएँ इस प्रकार है। वर्गाकार विमान, मंडप, गोपुरम, कलापूर्ण स्तंभों से युक्त वृहद सदन। सजावट के लिए पौराणिक सिंह (याली) तथा संयुक्त स्तंभों के प्रयोगादि। बाद के मंदिरों में सुंदर तक्षणों का शिवमंदिर (राजराजेश्वर मंदिर) द्रविड़ भवन कला-शैली का एक शानदार नमूना है। एक के बाद एक तेरह मंजिलों के ऊपर 82 वर्गफुट के आधार पर स्थित इसका गगनचुंबी विमान ऐसा मालूम पड़ता है, मानो कोई पिरामिड हो। इसके शीर्ष पर पचास या अस्सी टन वजन का प्रतिष्ठ एवं दर्शनीय है। चोलों ने मूर्तिकला को भी प्रोत्साहन दिया। उनके समय में निर्मित मन्दिर पत्थर तथा धातु की मूर्तियाँ की गरिमा, सौंदर्य तथा प्रांजलता देखने के योग्य है। इसके बाद दक्षिण के मंदिरों में गोपुरमों (मुख्य द्वार) की प्रधानता दी गई।

चोल शासकों ने विशाल पैमाने पर शिल्पकला के कार्य किए। सिंचाई के हेतु उनकी विशाल योजनाएँ प्रशंसनीय है। दक्षिण भारत में नहरों की प्रणाली चोलों की ही देन है।

चोल नगर के केन्द्र में एक मंदिर होता था P.T.O.

Scanned with CamScanner

<u>तंजौर का मंदिर</u> → चोल मंदिरों में चिदंबरम और तंजौर के (1011ई.) चौदह मंदिर सर्वोत्कृष्ट है। तंजौर का शिवमंदिर सबसे ऊपर प्रस्तरखंड मंजिल का 190 फुट ऊँचे शिखर का है। इसके ऊपर का भीमकाय गुंबद है, जो 25 फुट ऊँचा और 80 टन का वजन का है और कलाकृतियों से सुसज्जित भी। इसके अलंकरण में मूर्त्याकृतियों से पच्चीकारी का उपयोग है। वैष्णव और शैव सम्प्रदाय की मूर्तियाँ भी उत्कीर्ण है। यहाँ वैष्णव और शैव का समन्वय देखा जाता है। तंजौर में एक सुब्रह्मण्य मंदिर है, जिसका शिखा भी उत्तम कलात्मक ढंग से अलंकृत है। यह चोल - वास्तुकला का एक अन्यतम उदाहरण है।

<u>श्री रंगपट्टम का मंदिर :—</u>

श्री रंगपट्टम का मंदिर भी दक्षिण में वास्तुकला का एक श्रेष्ठ उदाहरण है। इसमें सहस्रस्तंभों वाला एक भव्य सभामंड है, जिसकी लम्बाई 450 फुट और चौड़ाई 130 फुट है। चोल - युग में निर्मित नटराज शिव की काँसे की मूर्तियाँ भी सर्वोत्कृष्ट कृतियाँ मानी जाती है। मंदिरों और भवनों को सूक्ष्म तक्षण से अलंकृत किया गया है। गोपुरम शैली का विकास भी इसी युग में शुरू हुआ। यह मंदिर के परिवेष्ठन का विशाल द्वार है, जिसे गोपुरम कहते थे। धीरे - धीरे गोपुरमों की संख्या में वृद्धि होती गई और गोपुरम अपने शिखर की अत्यधिक ऊँचाई और भव्यात्मक अलंकरण के कारण प्रसिद्ध हो गए। कुंभकोणम का गोपुरम स्वयं दर्शनीय भवन है।

<u>धर्म</u> → चोल राजा शैव थे, और द्रविड प्रदेश में इस धर्म की प्रधानता थी। P.T.O.

चोल शासक दूसरे धार्मिक सम्प्रदायों के प्रति भी उदार थे। वैष्णव। बौद्ध और जैन सम्प्रदायों का भी राजराज ने विष्णुमंदिर बनवाया था, और बौद्ध — विहारों को दान दिया था। कुलोतुंग प्रथम के कुव्यवहार के कारण रामानुज को चोल राज्य छोड़कर होयसल की राजधानी द्वारसमुद्र जाना पड़ा था। कुलोतुंग के पुत्र विक्रम ने पिता की नीति बदल दी। और रामानुज को वापस बुला लिया। चोल — लेखों में वैदिक कर्मकांड की चर्चा कम है। केवल राजाधिराज के लेखों में अश्वमेधयज्ञ का उल्लेख मिलता है। पूजा पद्धति में मूर्तिपूजा और तीर्थयात्रा की प्रधानता थी। राजराज और राजेन्द्र प्रथम के अभिलेखों में उल्लिखित शिव के ईशान, शर्व, शिव आदि नाम शैव - सम्प्रदाय का उत्तरभारतीय सम्पर्क प्रामाणित करते हैं। वैष्णव आलवार तथा शैव नायनमार अपने सिद्धान्तों की व्याख्या तथा प्रचार में सर्वथा स्वतंत्र थे।

निष्कर्ष →

निष्कर्षतः कह सकते हैं कि चोल युग दक्षिण भारत के एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। दक्षिण में चोल-कालीन समाज जातिव्यवस्था पर आधारित था। उद्योग — व्यवसाय करने वाली जातियों का विभाजन बलंगाई (दाएँ) और इडगाई बाएँ / वर्गों में हो चुका था। कुलोतुंग तृतीय के समय इडगाई लोगों ने अपने अग्निकुल का घोषित किया और इनके 98 वर्गों का उल्लेख मिलता है। दक्षिण भारत में भी हो चुका था। P.T.O.

अनुलोम - प्रतिलोम विवाहों के चलते कुछ मिश्रित जातियों के होने का उल्लेख भी मिलता है। दक्षिण भारत में स्त्रियों की स्थिति उत्तर की अपेक्षा अच्छी थी। उच्चकुलों की स्त्रियाँ सम्पत्ति की स्वामिनी होती थी, और अपने इच्छानुसार उसे बेच भी सकती थी। राजा और सामंत अनेक स्त्रियाँ रखते थे। देवदासियों की प्रथा प्रचलित थी। श्रमजीवियों का जीवन दासता के ही बराबर था; और दास प्रथा का भी प्रचलन भी दक्षिण भारत में था। राज्य की ओर से कृषि की प्रगति के लिए प्रयास होता था, और व्यापार को प्रोत्साहन दिया जाता था। नमक, आभूषण, वस्त्र, मसाला आदि का व्यापार होता था। व्यापारियों की अनेक श्रेणियां थी, जो व्यापार का निरीक्षण करती थी। नानादेशी तैयावलि अवनुलकवा नामक एक विशाल व्यापारिक श्रेणी का उल्लेख मिलता है, और उनके विदेशों से व्यापार सुदूर समुद्र पार करते थे।

1015, 1033 और 1077 ई. में चोल सम्राटों ने चीन में अपना शिष्टमंडल भेजा था। धर्म के दृष्टिकोण से शैव और वैष्णव मत का बड़ा ही विकास हुआ। वैदिक यज्ञों का अनुष्ठान भी शुरू हुआ और मंदिरों की प्रतिष्ठा बढ़ने लगी। मंदिर आर्थिक जीवन के केन्द्र बन गए। साहित्य के क्षेत्र में भी काफी प्रगति हुई। तिरुत्तकदेवर ने जीवकचिंतामणि नामक महाकाव्य की रचना की। तोलामोलि नामक जनलेखक ने शूलमणि की रचना की। जयगोंडार ने कलिंगत्तुपर्णि, कंबन ने रामावतारम्, कल्लाडनार, कालाडम आदि ग्रंथों की रचना की। वेंकटमाधव ने ऋग्वेद पर अपना भाष्य लिखा।

भारतीकुमारी
27-04-2022